HINDI

(*Three hours*)

*(Candidates are allowed additional 15 minutes for **only** reading the paper.*

*They must **NOT** start writing during this time.)*

---

*Answer questions **1, 2 and 3** in Section **A** and **four** other questions from Section **B** on at least **three** of the prescribed textbooks.*
*If you answer **two** questions on any **one** book, do not base them **both** on the **same** material.*

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

SECTION A

1. **Write a composition in HINDI in approximately 400 words on any ONE of the topics given below :—** [20]

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग **400** शब्दों में हिन्दी में निबन्ध लिखिये :—

(a) आधुनिक युग में विवाह समारोहों पर भारी धन खर्च किया जाने लगा है। आपने अभी-अभी एक ऐसा ही विवाह समारोह देखा है जिसमें अत्यधिक खर्च किया गया। आपके विचार में वहां पर किए गए किन-किन खर्चों को किस प्रकार कम किया जा सकता था। विस्तार से लिखिए।

(b) बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है जो विनाश कर डालती है। इस विषय पर एक प्रस्ताव लिखिए।

(c) व्यक्ति की उन्नति में संस्कारों, शिक्षा एवं सामाजिक परिवेश का योगदान होता है। इस विषय का विवेचन कीजिए।

(d) कहा जाता है, उधार लेना और देना दोनों ही गलत हैं। इस विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार लिखें।

(e) समय के महत्व को जिसने नहीं समझा, वह जिन्दगी की दौड़ में पीछे रह जाता है। इस विषय का विवेचन कीजिए।

(f) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर मौलिक कहानी लिखिए :—

   (i) चढ़ते सूरज को सब सलाम करते हैं।

   (ii) एक कहानी लिखिए जिसका अन्तिम वाक्य होगा .... बस संयुक्त परिवार का यही लाभ होता है।

© *Copyright reserved.*

2. **Read the following passage and answer the questions that follow :—**

निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर, अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :—

परोपकार प्रकृति का सहज स्वाभाविक नियम है। जलवायु, मिट्टी, वृक्ष, प्रकाश, पशु, पक्षी आदि प्रकृति के सभी अंग किसी न किसी रूप में दूसरों की भलाई में तत्पर रहते हैं।

अर्थात् वृक्ष परोपकार के लिये फलते हैं, नदियाँ परोपकार के लिये बहती हैं, गाय परोपकार के लिये दूध देती है। यह शरीर भी परोपकार के लिये है। वास्तव में जब प्रकृति के जीव-जन्तु नि:स्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई में तत्पर रहते हैं तब विवेकशील प्राणी होते हुए भी मनुष्य यदि जाति की सेवा न कर सके तो जीवन सफलता के लिये कलंक स्वरूप है। मनुष्य होते हुए भी मनुष्य कहलाने का उसे कोई अधिकार नहीं है।

परोपकार ही मानवता का सच्चा आदर्श है। यही सच्ची मनुष्यता है। राष्ट्रकवि गुप्तजी ने यह कहा कि "वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिये मरे।" मनुष्य वही है जो केवल अपने सुख-दु:ख की चिन्ता में लीन नहीं रहता, केवल अपने स्वार्थ की ही बात नहीं सोचता, जिसका शरीर लेने के लिये नहीं देने के लिये है। उसका हृदय सागर की भाँति विशाल होता है, जिसमें समस्त मानव समुदाय के लिये प्रेम से भरा स्थान रहता है। सारे विश्व को वह अपना परिवार समझता है।

सचमुच परोपकार ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है। यदि किसी मनुष्य के हृदय में त्याग और सेवा की भावना नहीं है, उसका मन्दिरों में जाकर पूजा और अर्चना करना ढोंग और पाखण्ड है। प्रसिद्ध नीतिकार सादी का कथन है कि "अगर तू एक आदमी की तकलीफ को दूर करता है तो वह कहीं अधिक अच्छा काम है, बजाय कि तू हज को जाये और मार्ग की हर एक मंजिल पर सौ बार नमाज पढ़ता जाये।" सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है कि वह दूसरों के सुख-दु:ख की चिन्ता करे, क्योंकि उसका सुख-दु:ख दूसरों के सुख-दु:ख के साथ जुड़ा हुआ है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने स्वार्थ साधन में लिप्त न रहकर दूसरों की भलाई के लिए भी कार्य करे।

बिना किसी स्वार्थ भाव को लेकर दूसरों की भलाई के लिये कार्य करना ही मनुष्यता है। इस परोपकार के अनेक रूप हो सकते हैं। यदि आप शरीर से शक्तिमान हैं तो आपका कर्त्तव्य है कि दूसरों के द्वारा सताये गये दीन-दु:खियों की रक्षा करें। यदि आपके पास धन-सम्पदा है तो आपको विपत्तियों में फँसे अपने असहाय भाइयों का सहायक बनना चाहिए। भूखों को रोटी और निराश्रितों को आश्रय देना चाहिए। यदि आप यह सब कुछ करने में भी असमर्थ हैं तो अपने दु:खी और पीड़ित भाइयों को मीठे शब्दों द्वारा धीरज और सांत्वना प्रदान कीजिए। यही नहीं, किसी भूले हुए को रास्ता दिखा देना, संकट में अच्छी सलाह देना, अन्धों का सहारा बन जाना, घायल अथवा रोगी की चिकित्सा करना, ये सब परोपकार के महत्वपूर्ण अंग हैं। वास्तव में हृदय में किसी के प्रति शुभ विचार भी परोपकार का ही रूप है।

प्राचीनकाल में दधीचि नाम के प्रसिद्ध महर्षि थे। ईश्वर-प्राप्ति ही उनका जैसे लक्ष्य था। परन्तु परोपकार वश उन्होंने देवताओं को वज्र बनाने के लिए अपनी हड्डियाँ तक दान में दे दी थी। गुरु तेग बहादुर ने परोपकार के लिए अपना शीश औरंगजेब को भेंट कर दिया था।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम प्रकृति से शिक्षा लें तथा अपने महापुरुषों के जीवन का अनुसरण करें। नि:स्वार्थ भाव से परोपकार के कार्यों में लगें।

प्रश्न :—

(a) परोपकार से आप क्या समझते हैं ? गद्यांश के अनुसार किन महापुरुषों ने अपने जीवन का त्याग परोपकार के लिये किया ? [4]

(b) प्रकृति के अंग किस प्रकार हमें परोपकार की शिक्षा देते हैं ? [4]

(c) परोपकारी मनुष्य का स्वभाव कैसा होता है ? [4]

(d) परोपकार मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म किस प्रकार होता है ? [4]

(e) गद्यांश के आधार पर बताइए कि परोपकार के महत्त्वपूर्ण अंग कौन से हैं, किस-किस तरह से परोपकार किया जा सकता है ? [4]

3. **(a) Correct the following sentences :—** [5]

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :—

(i) तुम प्रात:काल के समय उठकर क्या करते हो ?

(ii) मेरी पढ़ाई में बहुत नुकसान हो रहा हैं।

(iii) वह विद्वान लड़की है।

(iv) हमने रात को खूब सोया।

(v) फूलों की सौन्दर्यता देखते ही बनती है।

(b) Use the following idioms in sentences of your own to illustrate their meaning :— [5]

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए :—

(i) बाल बाँका न होना।

(ii) मैदान मारना।

(iii) हाथ तंग होना।

(iv) घर सिर पर उठाना।

(v) खाक में मिलना।

SECTION B

काव्य-तरंग

4. 'सच्ची मित्रता' शीर्षक चौपाइयों में तुलसीदास ने किस प्रकार सच्चे मित्र के गुणों पर प्रकाश डाला है ? [12½]

5. गुप्त जी ने 'विश्वराज्य' शीर्षक कविता में विश्व मानवता का संदेश दिया है। स्पष्ट कीजिए। [12½]

6. 'सुमन के प्रति' किसकी रचना है ? इसमें विकसित और मुरझाए फूल में क्या अन्तर दिखाया गया है ? फूल के माध्यम से क्या भाव व्यक्त किया गया है ? [12½]

निर्मला

7. मुंशी तोताराम निर्मला की दृष्टि में दया के पात्र क्यों बन गए ? [12½]

8. "यह स्नेह, वात्सल्य और विनय की देवी है या ईर्ष्या और अमंगल की मायाविनी मूर्ति ?" मंसाराम निर्मला के किस व्यवहार से सोच में पड़ गया और क्यों ? कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [12½]

9. "ऐसे सौभाग्य से मैं वैधव्य को बुरा नहीं समझती। दरिद्र प्राणी उस धनी से कहीं सुखी है, जिसे उसका धन साँप बन काटने दौड़े। उपवास कर लेना आसान है, विषैला भोजन करना उससे कहीं अधिक मुश्किल।" इस कथन के आधार पर सुधा के किस स्वभाव का पता चलता है, स्पष्ट कीजिए। [12½]

कथा-सुरभि

10. "सन्यास का अर्थ गृहस्थ जीवन से पलायन नहीं वरन् उसका पालन करना है।" कहानी का सार लिखते हुए उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। [12½]

11. 'भाग्य रेखा' कहानी में यजमान मजदूर-वर्ग का व्यक्ति है, जो क्रान्ति में विश्वास रखता है। कथानक के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [12½]

12. "कामकाज कहानी में तीन कहानियाँ होने के बाद भी उनमें कथानक-ऐक्य है।" कैसे ? स्पष्ट कीजिए। [12½]

ज्वालामुखी के फूल

13. "भला इस झगड़े का निर्णय कैसा होगा। यह किशोर राजा क्या न्याय करेगा ?" यह आशंका कौन व्यक्त कर रहा है ? किशोर राजा कौन है ? झगड़ा किस-किसमें हो रहा है तथा क्यों ? किशोर राजा ने इस झगड़े का क्या निर्णय किया ? [12½]

14. "मगध के उपमहामात्य आर्य शकटार की सहायता मिलती रहने के कारण चाणक्य को किसी प्रकार की असुविधा नहीं थी।" आर्य शटकार चाणक्य को आर्थिक सहायता तथा अन्य सुविधाएँ क्यों दे रहे थे ? [12½]

15. आर्य राक्षस ने मगध का महामात्य बनना क्यों स्वीकार कर लिया ? उन्होंने यद स्वीकार कर पहला निर्णय क्या दिया था ? [12½]